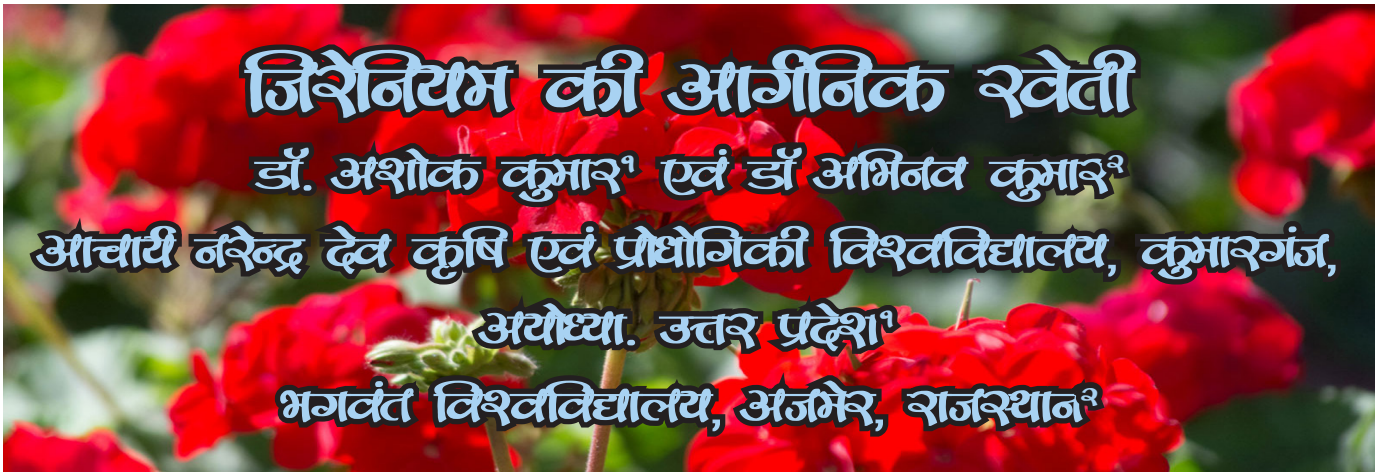

जिरेनियम की आर्गेनिक खेती

डॉ. अशोक कुमार[1] एवं डॉ अभिनव कुमार[2]
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौधोगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या. उत्तर प्रदेश[1]
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान[2]

साधारण नामः जिरेनियम, रोज जिरेनियम,
वानस्पतिक नामः पेलार्गोनियम ग्रेवियोलेंस
प्रमुख रासायनिक घटकः जिरेनियाल व एल–सिट्रोनेलाले।

सुगन्धित पौधों की खेती किसानों के लिए अतिरिक्त आमदनी एक प्रमुख जरिया बन सकती है। जेरेनियम भी एक ऐसा ही सुगंधित पौधा है जिसका तेल बेहद कीमती होता है। जिरेनियम पौधे की पत्तियों और तने से सुगंधित तेल निकला जाता है। लखनऊ स्थित सीएसआईआर–केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप) के वैज्ञानिकों ने पॉलीहाउस की सुरक्षात्मक शेड तकनीक विकसित की है, जिससे जेरेनियम उगाने की लागत कम हो गई है।

आमतौर पर जेरेनियम की पौधे से पौध तैयार की जाती है। लेकिन, बारिश के दौरान पौध खराब हो जाती थी, जिसके कारण किसानों को पौध सामग्री काफी महंगी पड़ती थी। सीमैप के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित जेरेनियम की खेती की इस नई तकनीक से करीब 35 रुपये की लागत में तैयार होने वाला पौधा अब सिर्फ दो रुपये में तैयार किया जा सकेगा। जेरेनियम मूल रूप से दक्षिण अफ्रीका का पौधा है। इसकी खेती मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार, हिमाचल प्रदेश और उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में होती है।

जेरेनियम के पौधे से प्राप्त तेल काफी कीमती होता है। भारत में इसकी औसत कीमत करीब 12 से 18 हजार रुपये प्रति लीटर है। मात्र चार माह की फसल में लगभग 80 हजार रुपये की लागत आती है और इससे करीब 1.50 लाख रुपये तक मुनाफा होता है।

कम पानी और जंगली जानवरों से परेशान परंपरागत खेती करने वाले किसानों के लिए जिरेनियम की खेती राहत देने वाली साबित हो सकती है। जिरेनियम कम पानी में आसानी से हो जाता है और इसे जंगली जानवरों से भी कोई नुकसान नहीं है। इसके साथ ही नए तरीके की खेती 'जिरेनियम' से उन्हें परंपरागत फसलों की अपेक्षा ज्यादा फायदा भी मिल सकता है। खासकर पहाड़ का मौसम इसकी खेती के लिए बेहद अनुकूल है। यह छोटी जोतों में भी हो जाती है।

जलवायुः

जिरेनियम एक उपोष्ण, ठंड एवं शुष्क जलवायु का पोधा होता है और इसके लिए 25–30 डिग्री तापक्रम एवं आर्द्रता 60ः से कम अच्छी बढ़वार के लिये उपयुक्त होती है ।

भूमिः

जिरेनियम के लिए दोमट भूमि जिसका पी.एच. मान 5.5–8.0 सबसे उपयुक्त रहता है । जिरेनियम के लिए जीवांश पदार्थ की अधिकता एवं समुचित जल निकास की व्यवस्था वाली मृदा उपयुक्त रहती है।

प्रवर्धनः

जिरेनियम का प्रवर्धन कलम (कटिंग) से किया जाता है जिसके लिए 12–15 सेमी. लम्बी, रोग मुक्त 3–4 गांठों वाली शाकीय कटिंग से पौधें तैयार किये जाते है।

पौध रोपण एवं खेत की तैयारीः

पौध रोपण के लिए खेत की अच्छे से जुताई करनी चाहिए, जुताई के पश्चात् उसमें सड़ी हुई

10–15 टन गोबर की खाद मिलाकर सुविधाजनक आकार की क्यारियों में रोपाई 50 X 50 सेमी. की दूरी पर करनी चाहिए। जिरेनियम उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में नवम्बर से जनवरी के मध्य लगाते है।

खाद एवं उर्वरक:

खाद एवं उर्वरक को मृदा परीक्षण के अनुसार देना उचित रहता है तथा 60 किग्रा. फास्फोरस, 40 किग्रा. पोटाश प्रति हे. के हिसाब से अन्तिम जुताई के समय मिला देना चाहिए। नत्रजन को तीन बार 50 किग्रा. प्रति हे. की दर से 20–25 दिन के अन्तराल पर डालना चाहिए। एक हे. में कुल 150 किग्रा. नत्रजन डालनी चाहिए है।

आर्गनिक खाद :–

जिरेनियम कि अधिक उपज लेने के लिए भूमि में पर्याप्त मात्रा में खाद डालना अत्यंत आवश्यक है इसके लिए एक हे. भूमि में ३५–४० क्विंटल गोबर कि अच्छे तरीके से सड़ी हुई खाद और आर्गनिक खाद २ बैग भू–पावर वजन ५० किलो ग्राम, २ बैग माइक्रो फर्टीसिटी कम्पोस्ट वजन ४० किलो ग्राम, २ बैग माइक्रो नीम वजन २० किलो ग्राम, २ बैग सुपरगोल्ड कैल्सी फर्ट वजन १० किलो ग्राम, २ बैग माइक्रो भू–पावर वजन १० किलो ग्राम और ५० किलो अरंडी कि खली इन सब खादों को अच्छी तरह मिला. कर खेत में बुवाई से पहले इन खादों को मिलाकर समान मात्रा में बिखेर दें फिर खेत कि अच्छी तरीके से जुताई करके खेत तैयार करें और फिर उसके बाद बुवाई करें।

सिंचाई:

फसल को 5–6 सिंचाई की आवष्कता पड़ती है।

खरपतवार नियंत्रण :

जिरेनियम कि फसल के साथ उगे खरपतवारों कि रोकथाम के लिए आवश्यकता अनुसार निराई– गुड़ाई करते रहे चूँकि जिरेनियम उथली जड़ वाली फसल है इसलिए उसकी निराई– गुड़ाई ज्यादा गहरी न करें और खरपतवार को उखाड़ कर नष्ट कर दें।

उन्नत किस्म:

सिम–पवन, बोरबन, सिमैप बयों जी–17

कटाई:

100–120 दिन की फसल होने के बाद कटाई करते है। दूसरी कटाई पहली कटाई के 60–90 दिनों के बाद करते है। ऊपर से 20–30 सेमी. तक केवल हरी शाखाओं को काटना चाहिए। कटाई के बाद कटे हुए पौधों पर ताँबायुक्त फफूँदी नाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिए।

कीट नियंत्रण :

चौंपा :

यह कीट पत्तियों और पौधों के अन्य कोमल भागों का रस चूसता है जिसके कारण पत्तिय पिली पड़ जाती है।

रोकथाम :–

इसकी रोकथाम के लिए नीम का काढ़ा या गोमूत्र को माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह मिश्रण तैयार कर २५० मि. ली. मिश्रण को प्रति पम्प के हिसाब से फसल में तर–बतर कर छिडकाव करें।

रोग नियंत्रण :

ब्लैक राट :

यह रोग एक्स एंथोमोनास कैम्पेस्ट्रिस द्वारा होता है रोगी पौधों कि पत्तियों पर अंग्रेजी के (ट) के आकार के भूरे या पीले रंग के धब्बे स्पष्ट दिखाई देंगे इसके कारण जड़ या डंठल के भीतरी भाग पलते पड़ जाते है और पत्ते धीरे–धीरे पीले पड़कर सुख जाते है।

रोकथाम :–

इसकी रोकथाम के लिए बीज को बोने से पूर्व गोमूत्र , कैरोसिन या नीम का तेल से बीज को उपचारित करके बोएं।

खेती के लाभ:–

- पहाड़ के ढलान वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त
- कम पानी वाले क्षेत्रों में आसानी से खेती
- बाजार में अत्यधिक मांग एवं उचित दाम
- छोटी जोतों के लिए उपयुक्त यहां होता है उपयोग जिरेनियम के तेल में गुलाब के तेल जैसी खुशबू आती है।
- इसका प्रयोग साबुन, सौंदर्य प्रसाधन, उच्च स्तरीय इत्र व तंबाकू के साथ ऐरोमाथिरेपी में किया जाता है।